उत्पत्ति 1:1-3

पाठ - 1

''एलोहीम'' () शब्द ''एलोवाह'' () शब्द का बहुवचन है। इसे अंग्रेजी भाषा मे परमेश्वर () शब्द से अनुवाद किया गया है। पृथ्वी और आकाश की रचना करते समय पिता, पुत्र और पवित्रात्मा की आपसी–सहमति को पवित्रशास्त्र में देखा जा सकता है।

परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश की सृष्टि की। उत्पत्ति 1:1–3 में लिखा गया है। आदि में परमेश्वर ने आकार और पृथ्वी की सृष्टि की। पृथ्वी बेडौल और सुनसान पडी थी और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था। तब परमेशवर ने कहा ''उजियाला हो'' तो उजियाला हो गया। इसी तरह यूहन्ना रचित सुसमाचार 1:1–3 के अनुसार ''आदि मेम वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ...'' सृष्टि के आरम्भ के बारें में हमें उतना ही ज्ञात है जितना परमेश्वर ने प्रकट किया। बुद्धिजीनियों के सिद्धांत पूरी तरह से प्रमाणित नही हुए है और वे परमेश्वर के प्रकाशित वचन के विरोध में है।

सृष्टि की रचना के अंतिम दिन यानि उत्पत्ति 1:26–27 में इस तरह लिखा गया है। परमेश्वर ने कहा ''हम मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार अपनी समानता में बनाए। और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, आधिकार रखें।'' मनुष्य की सृष्टि परमेश्वर के अन्य सृष्टियों से भिन्न है क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी स्वरुप के अनुसार और अपनी समानता में बनाया। फिर भी मनुष्य परमेश्वर की सम्पूर्ण नकल नही था। मनुष्य रक्त और मांस से बनाया गया है जबकि परमेश्वर तो आत्मा है।

परमेश्वर ने अपनी सारी सृष्टि के मध्य में मनुष्य को रखा। परमेश्वर वे आदम से कहा कि वह उसकी देखभाल करे तथा उसमें काम करें और उसका संरक्षण करे। ''और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, ''तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है पर भले या बुरे के ज्ञान को जो

वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।'' उत्पत्ति 2:16-17

''अत: जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और देखे में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोडकर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।'' उत्पत्ति 3:6

''परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पडता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु के उत्पन्न करता है।'' याकूब 1:14-15

हव्वा को वह फल देखने में मनभाऊ और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी लगा लेकिन इस सन्दर्भ में उनकी आनाज्ञाकारिता और उसका परिाम तुरन्त आया। कुछ अवसरों में परमेश्वर से दण्ड पाने वाले व्यक्ति को उसका पाप दिख जाता ैह। वे स्वर्गलोक () के समान अदन की वाटिका से निकाले जाकर कष्ट और दु:ख वाली जगह अर्थात भूमि पर भेजे गए। इन पहले मनुष्यों की अनाज्ञाकारिता के कारण यानि पाप के कारण मनुष्य का पतन आरंभ हुआ। परमेश्वर ने कहा कि वह फल खाने से निश्चय मर जाएंगे। परमेश्वर के वचन के अनुसार फल खाते ही परमेश्वर के स्वरुप मे बनाए गए उनके आत्मिक जीवन में वे भर गए ''तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, तूने जो यह किया है इसलिए तू सब घरेलू पशुओं और सब बनैले पशुअें से अधिक शापित है, तू पेट के बल चला करेगा और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा: और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एडी को डसेगा। फिर स्त्री से उसने कहा, मैं तेरी पीडा और तेरे गर्भवती होने के दु:ख को बहुत बढाऊगा, तू पीडित होकर बालक उत्पन्न करेगी: और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। और आदम से उसने कहा तूने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तूझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना, उसको तूने खाया है इसलिए भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दु:ख के साथ खाया करेगा और वह तेरे लि काँटे और ऊंटकटोर उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा, और अपने माथे के पसीने ली रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा क्योंकि तू

उसी में ने निकाल गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाऐगा।'' उत्पत्ति 3:14-19

इस पाप के कारण आदम और हव्वा परमेश्वर से अलग किए गए और अब उन्हे फिर से परमेश्वर की सहभागिता की आवश्यकता है। परमेश्वर के साथ फिर से सहभागिता और उनकी अनाज्ञाकारिता के कारण हुए पाप का प्रायश्चित करने के लिए मनुष्य को एक सम्पूर्ण बलिदान की आवश्यकता है। इसलिए प्रथम मनुष्यों के द्वारा किया गया सबसे पहला पाप सारी मनुष्य जाति के लिए शाप का कारण बना। अत: समस्त मान जाति को परमेश्वर के साथ फिर से मिलाए जाने के लिए एक सम्पूर्ण बलिदान की आवश्यकता है।

प्रश्न

1. केवल भले और बुरे का ज्ञान के वृक्ष का फल को ही परमेश्वर ने नही खाना को कहा था।
   अ) ..... हाँ ब) .....नहीं
2. हव्वा के मालूम नही था कि भले और बुरे का ज्ञान देने वाले वृक्ष का फल खाने को मनाही है।
   अ) .....हाँ ब) .....नहीं
3. आदम और उसके द्वारा उत्पन्न सारे मनुष्य
   अ) पूरी रीति से परमेश्वर के समान है।
   ब) साँस लेने वाले सारे जीव
   स) परमेश्वर के स्वरुप में हैं।
4. अपने स्वरूप मे सृजे गए मनुष्य की अनाज्ञाकारिता से परमेश्वर उनके प्रति दु:खित हुआ।
   अ) .....हाँ ब) .....नहीं
5. उस निषेधित फल को हव्वा ने आदम से खाने को कहने पर, उसके लिए सृजी गई हव्वा की बात को मानने के सिवाय आदम के पास कोई दूसरा मार्ग नहीं था।
   अ) .....हाँ ब) .....नहीं